Volume-5, Issue-1, January -2016 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Education

Linggat Bhinnataa Ke Sandharbh Men Uchch Madymik Vidyalayon Men Adhyayanrat Kshetra Swatatra Evm Kshetra Aadharit Vidyarthiyon Kee Shaikshik Uplabdhi Ka Adhyayan

लिंगगत भिन्नता के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

जया शर्मा — शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान – 304022

डॉ. मुरलीधर मिश्रा — एसोशिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान – 304022

ABSTRACT

लिंगगत भिन्नता के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिए राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में से कुल 2859 विद्यार्थियों (1442 बालकों तथा 1417 बालिकाओं) का न्यादर्श रूप में चयन स्तरीकृत यादृच्छिक गैर आनुपातिक गुच्छ न्यादर्शन विधि का प्रयोग करते हुए किया गया। क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित संज्ञानात्मक शैली पर वरीयताओं को जानने के लिए स्वनिर्मित एवं प्रमापीकृत 'क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थी अनुसूची' तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित सूचनाओं का संकलन करने हेतु स्वनिर्मित 'वैयक्तिक एवं शैक्षिक उपलब्धि प्रपत्र' का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष में जहाँ उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी; वहीं क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक भिन्नता पायी गयी।

KEYWORDS : लिंगगत भिन्नता, उच्च माध्यमिक स्तर, क्षेत्र स्वतंत्र, क्षेत्र आधारित, संज्ञानात्मक शैली, शैक्षिक उपलब्धि

जब बालक जन्म लेता है तब वह अपने वातावरण से सर्वथा अनभिज्ञ होता है। धीरे–धीरे वह वातावरण के साथ अंतःक्रिया करते–करते परिपक्व होने लग जाता है। वह अपनी समस्त ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से श्रवण, दृश्य, घ्राण, स्वाद एवं स्पर्शीय अनुभूति की शक्ति द्वारा इस वातावरण की सार्थकता एवं प्रकृति को समझता जाता है। ये समस्त क्रियायें उसके संज्ञान में सम्मिलित होती हैं। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में कई संज्ञानात्मक शैलियों की पहचान की गयी है। जिनके द्वारा व्यक्ति के सूचनाओं को ग्रहण करने व प्रयोग करने सम्बन्धी विशिष्टताओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इनमें प्रमुख संज्ञानात्मक शैली क्षेत्र– आधारित तथा क्षेत्र–स्वतंत्र शैली है। ब्रिटिश कौंसिल के अनुसार, "क्षेत्र–स्वतंत्र संज्ञानात्मक शैली को क्षेत्र या उसके विभिन्न घटकों में विश्लेषित कर लेने की प्रवृति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। ऐसे अधिगमकर्ता में बहुत सारी सूचनाओं में से प्रकरण या विषयवस्तु से संबंधित सूचनाओं को अलग कर उसका उपयोग करने की दक्षता पायी जाती है।" जबकि क्षेत्र–आधारित संज्ञानात्मक शैली वाला अधिगमकर्ता किसी विषय वस्तु को बिना इसके विभिन्न भागों पर ध्यान दिये सम्पूर्ण रूप में पहचानता है। क्षेत्र–आधारित अधिगमकर्ता सामूहिक रूप से अन्तर्वैयक्तिक संबंधों का अच्छे से निर्वहन करते हुए कार्य करने की प्रवृति रखते हैं।

गुड़ व स्केट्स (1954) के अनुसार प्राप्त ज्ञान या शालेय विषयों में विकसित प्रवीणता या कुशलता जो कि प्रायः परीक्षण में प्राप्त अंकों के द्वारा या शिक्षक द्वारा दिए गए अंकों द्वारा या दोनों के द्वारा निश्चित की गयी हो, शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों कक्षागत विषयों में प्राप्तांकों से लगाया जा सकता है। रहमान (2013) ने अपने शोध अध्ययन के निष्कर्ष में क्षेत्र–स्वतंत्र विद्यार्थियों के समूह की गणितीय समस्याएँ क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की तुलना में कम पायी। शुक्ला (1978), गुप्ता (1984), सोंधी एवं सपेरा (1987), हॉनसेन (1995), टिनाजेरा एवं पैरामो (1997), पुन्नु (2010) तथा राव (2014) ने क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित संज्ञानात्मक शैली का शैक्षिक उपलब्धि तथा अन्य भिन्न चरों के साथ अध्ययन किया, किन्तु उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का लिंगगत भिन्नता के साथ कोई अध्ययन भारत या विदेश में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्ता द्वय ने यह अध्ययन लिंगगत भिन्नता के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने के उद्देश्य से किया।

शोध परिकल्पना

लिंगगत भिन्नता के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने के लिए लिंगगत भिन्नता के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक भिन्नता होती है इस सांख्यिकीय परिकल्पना को शून्य रूप में परिवर्तित किया गया।

अध्ययन विधि

क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित बालक और बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिए शैक्षिक अध्ययन की वर्णनात्मक विधि 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का उपयोग किया गया।

परिसीमन

यह अध्ययन राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर किया गया है। बालक और बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिए दसवीं बोर्ड परीक्षा में प्राप्तांकों के प्रतिशत को आधार बनाया गया है।

न्यादर्शन एवं न्यादर्श

राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में स्थित एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से बालक और बालिका विद्यार्थियों का न्यादर्श हेतु चयन करने के लिए बहुस्तरीय न्यादर्शन के रूप में स्तरीकृत यादृच्छिक गैर आनुपातिक गुच्छ न्यादर्शन विधि का प्रयोग करते हुए कुल 2859 विद्यार्थियों (1442 बालकों तथा 1417 बालिकाओं) का चयन से किया गया।

शोध उपकरण

विद्यार्थियों की क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित संज्ञानात्मक शैली वरीयताओं को ज्ञात करने हेतु स्वनिर्मित एवं प्रमापीकृत 'क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थी अनुसूची' तथा वैयक्तिक एवं शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित सूचनाओं का संकलन करने के लिये स्वनिर्मित 'वैयक्तिक एवं शैक्षिक उपलब्धि प्रपत्र' का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

लिंगगत भिन्नता के आधार पर क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने हेतु 3X2 की सारणियाँ विकसित करते हुए शैक्षिक उपलब्धि के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं के 'काई वर्ग' मानों का परिकलन किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

लिंगगत भिन्नता के संदर्भ में उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के परिकलित काई वर्ग मानों का प्रस्तुतीकरण अग्रांकित सारणी में किया गया है:–

सारणी–1

क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि

क्र.सं.	वर्ग	शैली	शैक्षिक उपलब्धि स्तर			योग	काई वर्ग का परिकलित मान
			उच्च	औसत	निम्न		
1.	बालक	क्षेत्र स्वतंत्र	228	205	108	541	5.163*
		क्षेत्र आधारित	435	302	164	901	
2.	बालिका	क्षेत्र स्वतंत्र	205	98	48	351	6.161**
		क्षेत्र आधारित	543	363	160	1066	

मुक्तांश 2 व 0.05 के विश्वास स्तर पर काई वर्ग का तालिका मान 5.991

* सार्थक

** सार्थक नहीं

दण्ड चित्र–1
क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि

दण्ड चित्र–2
क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि

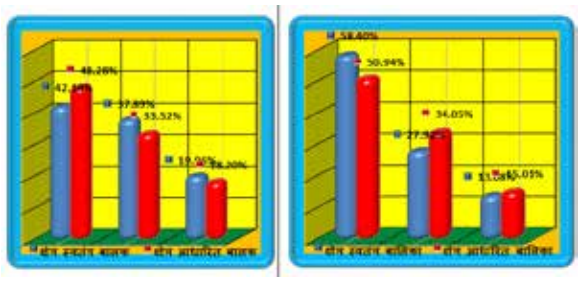

उपर्युक्त सारणी में लिंगगत भिन्नता के आधार पर क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के परिकलित काई वर्ग मानों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित बालिकाओं की उच्च औसत व निम्न शैक्षिक उपलब्धि का परिकलित काई वर्ग मान मुक्तांश 2 व सार्थकता के 0.05 विश्वास स्तर पर काईवर्ग सारणी मान से अधिक है। जबकि बालकों की उच्च, औसत व निम्न शैक्षिक उपलब्धि का परिकलित काईवर्ग मान सारणी मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना "लिंगगत भिन्नता के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक भिन्नता नहीं होती है" को क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित बालकों के लिए स्वीकृत तथा क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित बालिकाओं के लिए अस्वीकृत किया जाता है। अतः मुख्य परिकल्पना "लिंगगत भिन्नता के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक भिन्नता होती है" को क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित बालकों के लिए अस्वीकृत तथा क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालिकाओं के लिये स्वीकृत किया जाता है। प्रस्तुत शोध परिकल्पना के परीक्षण से यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक भिन्नता नहीं होती है तथा क्षेत्र–स्वतंत्र तथा क्षेत्र–आधारित बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक भिन्नता होती हैं।

उपर्युक्त दण्डचित्र–1 व 2 के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित अधिकांश बालक व बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च तथा औसत स्तर की है। क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालक व बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एक समान नहीं है। उच्च उपलब्धि अर्थात् 60 प्रतिशत व उससे अधिक के अन्तर्गत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालकों की तुलना में क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालिकाओं का प्रतिशत अधिक पाया गया। जबकि औसत स्तर अर्थात् 45 से 60 प्रतिशत के अन्तर्गत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालकों का प्रतिशत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालिकाओं की तुलना में अधिक पाया गया। इसी प्रकार निम्न स्तर अर्थात् 36 से 45 प्रतिशत के अन्तर्गत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालकों का प्रतिशत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पाया गया अर्थात् क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालिकाओं का शैक्षिक स्तर क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालकों की तुलना में अधिक है।

उच्च शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्गत क्षेत्र–आधारित बालकों का प्रतिशत क्षेत्र–स्वतंत्र बालकों की तुलना में अधिक है जबकि बालिकाओं के अन्तर्गत क्षेत्र–स्वतंत्र बालिकाओं में उच्च स्तर की शैक्षिक उपलब्धि का प्रतिशत क्षेत्र–आधारित बालिकाओं की अपेक्षा अधिक है। औसत शैक्षिक उपलब्धि में क्षेत्र–स्वतंत्र बालकों का प्रतिशत क्षेत्र–आधारित बालकों की अपेक्षा अधिक जबकि क्षेत्र–आधारित बालिकाओं में औसत स्तर की शैक्षिक उपलब्धि का प्रतिशत क्षेत्र–स्वतंत्र बालिकाओं की अपेक्षा अधिक प्राप्त हुआ। निम्न शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्गत क्षेत्र–स्वतंत्र बालकों का प्रतिशत क्षेत्र–आधारित बालकों की तुलना में जबकि बालिकाओं में क्षेत्र–आधारित बालिकाओं का प्रतिशत क्षेत्र–स्वतंत्र बालिकाओं की तुलना में अधिक प्राप्त हुआ। इस प्रकार उच्च, औसत व निम्न तीनों स्तरों पर क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालकों एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में भिन्ता पायी गयी किन्तु क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सांख्यिकीय रूप से सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी, जबकि क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सांख्यिकीय रूप से सार्थक भिन्नता पायी गयी है।

शैक्षिक निहितार्थ

उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की लिंगगत भिन्नता के संदर्भ में उच्च शैक्षिक उपलब्धि सर्वाधिक, औसत मध्यम तथा निम्न सबसे कम प्राप्त हुई है। विद्यार्थियों की औसत व निम्न शैक्षिक उपलब्धि स्तर में वृद्धि करने हेतु शिक्षक, प्राचार्य व शैक्षिक नियोजक क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र– आधारित विद्यार्थियों की पहचान कर उनकी संज्ञानात्मक शैली के अनुरूप अध्ययन व्यवस्था कर सकते हैं। क्षेत्र–स्वतंत्र विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हेतु शिक्षक परियोजना का प्रयोग कर सकते हैं। क्षेत्र–स्वतंत्र विद्यार्थियों को ग्रेड्स तथा प्रतियोगिता द्व ारा अभिप्रेरित किया जा सकता है। शैक्षिक नियोजकों, प्राचार्यों व अभिभावकों को क्षेत्र–स्वतंत्र विद्यार्थियों को गतिविधियों के चयन तथा वैयक्तिक लक्ष्यों के चार्ट द्वारा भी अभिप्रेरित किया जाना चाहिए। किये जाने वाला कार्य विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं तथा विद्यार्थियों को उनकी स्वयं की संरचना का निर्माण करने की स्वतंत्रता देकर भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर में वृद्धि की जा सकती है। इसी प्रकार क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में वृद्धि हेतु शिक्षक दर्शक दृष्टिकोण का प्रयोग कर सकते हैं। इन्हें शाब्दिक प्रशंसा एवं बाह्य पुरस्कारों जैसे स्टार, स्टिकर, ईनाम आदि के द्वारा भी इन विद्यार्थियों को अभिप्रेरित किया जाना चाहिए। शिक्षकों व अभिभावकों द्वारा क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों को अन्य लोगों द्वारा किए गए कार्यों के प्रदर्शन द्वारा तथा किए जाने वाले कार्य की रूपरेखा व संरचना उपलब्ध कराकर भी इन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में वृद्धि की जा सकती है। यद्यपि किसी भी विद्यार्थी की शैलियों या शैक्षिक उपलब्धि में तीव्र रूप से वृद्धि व सुधार संभव नहीं है किन्तु फिर भी निरन्तर प्रयास व अभ्यास से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में वृद्धि की जा सकती है। अतः क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित शैली वरीयताओं की जानकारी का उपयोग कर शैक्षिक नियोजक, प्राचार्या, शिक्षक, अभिभावक, अध्यापक–शिक्षक तथा स्वयं विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि स्तर में वृद्धि कर लाभान्वित हो सकते हैं।

REFERENCES

ब्रिटिश काउंसिल, 10, स्प्रिंग गार्डन्स, लंदन, एस.डब्ल्यू.आई.ए. 2 बी एन, यू.के. गुड, सी.वी. एवं स्केट्स, डी.ई. (1954); मैथड्स ऑफ रिसर्च एप्पलटन सेन्चुअरि क्रोफ्ट्स, न्यूयार्क. ग्राहम, ए. (2004); टीच योअरसेल्फ स्टेटिस्टिक्स, हूडर एण्ड स्टोग्हटोन, लन्दन. हॉनसेन, जॉन डब्ल्यू. (1995); स्टूडेंट्स कॉग्नीटिव स्टाइल्स इन पोस्टसेकेण्डरी टेक्नोलॉजी प्रोग्राम्स, जर्नल ऑफ टेक्नोलॉजी एजुकेशन, वोल्यूम–6, नं.–2, स्प्रिंग– 1995. माथुर, एस.एस. (2008); एड्यूकेशन साइकोलॉजी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 413–414. नागर, दिव्यप्रभा एवं अमोलिक, प्रेमलता (1999); संज्ञानात्मक मनोविज्ञान एवं शिक्षा, राजस्थान प्रकाशन, 1–2. रहमान, अब्दुल (2013); द प्रोफाइल ऑफ स्टूडेंट्स मैथमेटिकल प्रॉब्लम पासिंग बेस्ड ऑन देयर कॉग्निटिव स्टाइल, इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम तृतीय, इश्यू– सातवीं, 2013. सिंह, अरूण कुमार व सिंह, आशीष कुमार (2002); मनोविज्ञान के संप्रदाय एवं इतिहास, मोतीलाल, बनारसीदास, चतुर्थ संस्करण, 401. सोंधी, जी.एस. एवं सपेरा, रूमा (1987); "शैक्षणिक उपलब्धि पर संज्ञानात्मक स्तर, लिंग, व्यक्तित्व के प्रकार और उपलब्धि उत्प्रेरणा का प्रभाव", पी.एच.डी., पंजाब विश्वविद्यालय, फोर्थ सर्वे ऑफ एड्यूकेशनल (शिक्षा), रिसर्च (1983–87), वॉल्यूम –2, 532. थार्नडाइक, ई.एल., हजेन, ई. (1955), मेजरमेंट एण्ड इवेलुएशन इन साइकोलोजी एण्ड ऐजुकेशन, एन.वाई.जॉन विली. वेंकट, राव बी. (2014), अ स्टडी ऑफ अकेडमिक अचीवमेन्ट इन मैथमेटिक्स इन रिलेशन टू कॉग्निटिव स्टाइल्स एण्ड एटीट्यूड टुवर्ड्स मैथमेटिक्स, ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस, वोल्यूम–3, इश्यु–1, जनवरी–2014. विटकिन, एच.ए.एंड गुडइनफ, डी.आर. (1976); फील्ड डिपेंडेंस एंड इन्टर प्रिन्सटन, न्यूजर्सी, आर.बी. 16–12.